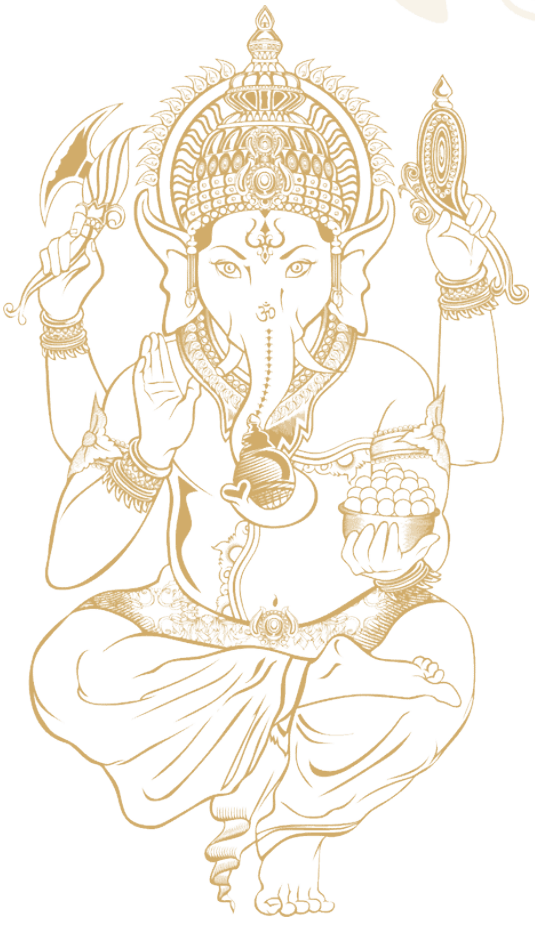

Sahil

Jaanvi

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119389203

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
14/09/1999	जन्म तिथि	18/03/2002
मंगलवार	दिन	सोमवार
घंटे 23:00:00	जन्म समय	23:20:00 घंटे
घटी 41:57:12	जन्म समय(घटी)	41:45:36 घटी
India	देश	India
Jammu	स्थान	Jammu
32:42:00 उत्तर	अक्षांश	32:42:00 उत्तर
74:52:00 पूर्व	रेखांश	74:52:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:30:32	स्थानिक संस्कार	-00:30:32 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:13:07	सूर्योदय	06:37:45
18:38:54	सूर्यास्त	18:40:09
23:50:57	चित्रपक्षीय अयनांश	23:52:59

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
गुरु 11वर्ष 7मा 24दि	23:32:44	वृष	लग्न	वृश्चि	03:38:56	शुक्र 2वर्ष 3मा 16दि
शनि	27:36:28	सिंह	सूर्य	मीन	04:04:09	मंगल
10/05/2011	23:37:29	तुला	चंद्र	मेष	25:08:11	04/07/2020
09/05/2030	13:47:36	वृश्चि	मंगल	मेष	18:09:52	05/07/2027
शनि 13/05/2014	02:56:27	कन्या	बुध	कुंभ	16:51:12	मंगल 30/11/2020
बुध 20/01/2017	10:26:05	मेष व	गुरु	मिथु	12:12:55	राहु 19/12/2021
केतु 28/02/2018	25:12:07	कर्क	शुक्र	मीन	19:22:46	गुरु 24/11/2022
शुक्र 30/04/2021	23:06:53	मेष व	शनि	वृष	15:30:45	शनि 03/01/2024
सूर्य 12/04/2022	18:21:00	कर्क व	राहु व	वृष	27:37:52	बुध 30/12/2024
चन्द्र 11/11/2023	18:21:00	मक व	केतु व	वृश्चि	27:37:52	केतु 29/05/2025
मंगल 20/12/2024	19:35:52	मक व	हर्ष	कुंभ	02:46:33	शुक्र 29/07/2026
राहु 27/10/2027	07:58:05	मक व	नेप	मक	16:16:41	सूर्य 04/12/2026
गुरु 09/05/2030	14:05:03	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	23:44:41	चन्द्र 05/07/2027

लग्न-चलित

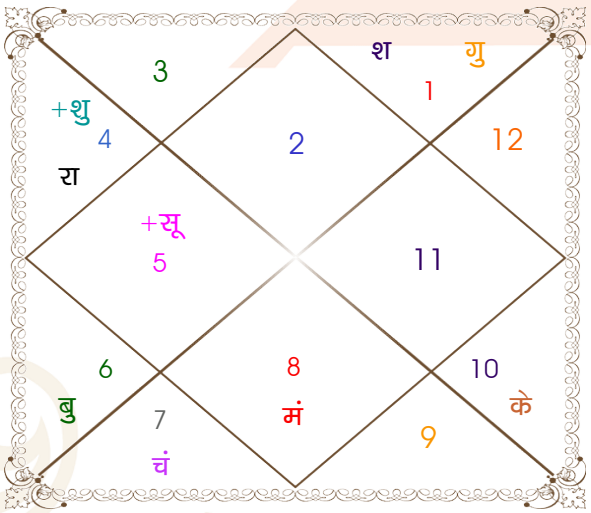

लग्न-चलित

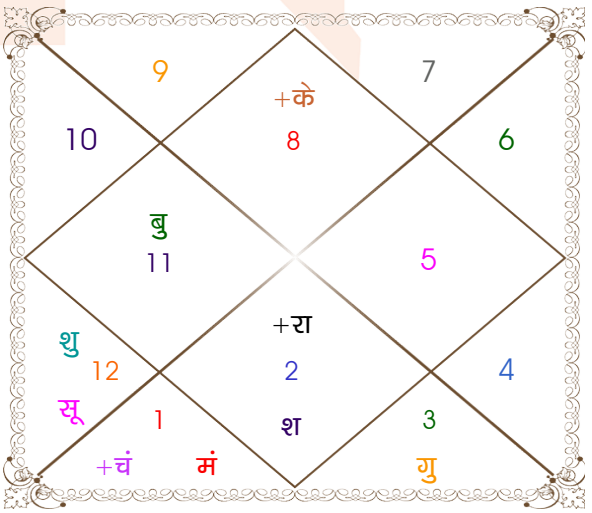

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	क्षत्रिय	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	साधक	प्रत्यारि	3	1.50	--	भाग्य
योनि	व्याघ्र	गज	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	मंगल	5	3.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	मनुष्य	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	तुला	मेष	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	21.50		

गणदोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता नहीं है।

Sahil का वर्ग सर्प है तथा Jaanvi का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Sahil और Jaanvi का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

Sahil मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल Sahil कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

Jaanvi मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु Jaanvi कि कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।

अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि Jaanvi कि कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल Jaanvi कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Sahil तथा Jaanvi में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।